(क) "अयोगवाहा विशेषा आश्रयस्थान भागिनः

(1)

वर्णों की सवर्ण संज्ञा और उसका अपवाद :-

तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्'

ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तर प्रयत्नश्चेत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यात् ।
समान कण्ठादि स्थान तथा आभ्यन्तर यत्नवाले वर्ण (सवर्णम्) सवर्ण-संज्ञक होते हैं।

जबतक सम्पूर्ण स्थान और सम्पूर्ण आभ्यान्तर यत्न समान न होगा, तब तक वर्णों की परस्पर 'सवर्ण' संज्ञा न होगी।

अर्थात्

सूत्र में 'आस्य' का प्रयोग होने से केवल 'मुख में होनेवाले स्थान' को ही ग्रहण किया जाता है। अर्थात् मुखगत स्थान समान होना चाहिए, मुख के बाहर का स्थान समान हो या न हो।

पाणिनीयशिक्षा → अयोगवाहा

विशेया आश्रयस्थान भागिनः।

मुखगत साम्य कण्ठगत, मूर्द्धगत, तालुगत तथा ओष्ठगत होते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट — क से म तक २५ वर्ण, ईषत् ~~ईषद्~~ ईषत् स्पृष्ट अन्तःस्थ, ईषद् विवृत उष्म तथा विवृत स्वर कहे जाते हैं। संवृत उच्चारण दशा में ~~ह~~ ह्रस्व आकार होता है।

बाह्य प्रयत्न एकादश प्रकार के होते हैं।

अणुदित् सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः

प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः। अविधीयमानोऽण् उदिच्च सवर्णस्य संज्ञा स्यात्। अत्रैवाण् परेण णकारेण कु चु टु तु पु एते उदितः।

अविधीयमान ~~त~~ अथवा अप्रत्यय का अर्थ है पाणिनीय के सूत्रों में षष्ठी विभक्ति से निर्दिष्ट पद।

सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में मात्र इसी सूत्र में अण् से लण् प्रत्याहार में स्थित ण कार गृहीत होता है अन्यत्र प्रथम प्रत्याहार सूत्र का ण कार ग्रहण किया जाता है।

प्रत्यय आगम तथा आदेश विधियमान होते हैं अतः सवर्णग्राही के वाचक नहीं होते।

उदीत के विषय में उक्त नियम लागू नहीं होता अतः चो: कु: सूत्र से अविधीयमान सम्पूर्ण चवर्ग का बोध होता है।

यह सूत्र पूर्वोक्त सूत्र को नियमित करता है।

Topic. 2 'संहिता, संयोग एवं पद संज्ञाएँ

वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।

वर्णों की अतिशय समीपता (अर्थात् व्यवधान राहित्य को 'संहिता' कहते हैं।

'हलोऽनन्तराः संयोगः।

अज्भिरव्यवहिता हलः संयोग-संज्ञाः स्युः